International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(4): 219-221

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(4): 219-221
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 08-05-2021
Accepted: 12-06-2021

मुकेश कुमार
ग्राम+पत्रालय– सहोडा,
भाया–तारापुर, जिला– मुंगेर,
बिहार, भारत

Corresponding Author:
मुकेश कुमार
ग्राम+पत्रालय– सहोडा,
भाया–तारापुर, जिला– मुंगेर,
बिहार, भारत

सामाजिक परिपेक्ष्य में उत्तररामचरित पर बाल्मीकि रामायण का प्रभाव

मुकेश कुमार

प्रस्तावना

आदिकवि ने तात्कालिक तीन प्रधान संस्कृतियों में मौखिक रूप में जीवित तीन सत्यकथाओं का आदिकाव्य में अन्तर्भाव कर दिया है। यह वह युग था जब अयोध्या के राजमहलों में उच्चस्तरीय आर्य संस्कृति का प्रसारण हो रहा था और राम उसके प्रणेता रूप में उत्तर भारत का नेतृत्व कर रहे थे। दक्षिण में राक्षसराज रावण अनार्य सभ्यता का स्वामी बन लंका के द्वीप–द्वीपान्तरों में अन्याय तथा अधर्म को महिमामण्डित कर रहा था। किष्किन्धा के वानरराज बालि मध्यभारत में राक्षसराज रावण से मैत्री स्थापित करने में अपनी सुरक्षा मान रहे थे, उनकी अनुकूलता प्राप्त कर महाराज रावण के प्रतिनिधि–खर,दूषण, त्रिशिरा और ताड़का जैसे भयङ्कर राक्षस शान्त मुनिवृत्तयों का उच्छेदन कर आर्य संस्कृति के विनाशकार्य में संलग्न थे। परशुराम द्वारा इक्कीस बार क्षत्रियों का संहार करने से आर्यावर्त की आर्यशक्ति भी कुण्ठित हो चुकी थी।

इन विषम परिस्थितियों में देवताओं, ऋषियों और गन्धर्वो ने वन्यजाति के उत्साही, तरूण, वीर युवकों की सहायता से अनार्य संस्कृति की समाप्ति का निश्चय किया जिसका परिचय महाराज दशरथ के अश्वमेघ–यज्ञ के अवसर पर आयोजित सार्वभौमिक परिषद से मिलता है–

> सत्यसन्धस्य वीरस्य सर्वेषां नो हितैषिणः।
> विष्णोः सहायान् बलिनः सृजध्वं कामरूपिणः।।[1]

देवगणों! भगवान् विष्णु सत्य प्रतिज्ञा, वीर और हम सब के हितैषी है। तुम लोग उनके सहायक पुत्रों की सृष्टि करो जो शक्तिशाली तथा इच्छानुसार रूप धारण करने में समर्थ हो। ब्रह्मा के आदेश से इन्हीं वानर, वृक्ष आदि वनचर जातियों में जन्म लेने वाले हनुमान, सुग्रीव, जाम्बवान् आदि के साथ दर्पहीन मधुर व्यवहार युद्धकाल में राम के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ और वे लङ्का विजय के अभियान में सफल हो सके।

वस्तुतः कवि ने रामायण में देश के तीन भूभागों–पूर्वोत्तर, पश्चिम और दक्षिण में बहुश्रुत तीन स्वतन्त्र आख्यानों को प्रक्षिप्त अंशों के साथ लेखनीबद्ध कर सम्पूर्ण भारत की वाल्मीकि की राम कथा का ही प्रभाव है कि रामकथा में वर्णित उत्तर से दक्षिण भारत तक के भौगोलिक स्थान राम के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं के साक्षी बन कर तीर्थ के रूप में श्रद्धेय हो गए। अयोध्या, जनकपुर, चित्रकुट प्रयाग आदि नगर प्रसिद्धि पाकर दक्षिण की धार्मिक जनता की आस्था के केन्द्र हुए तथा पंचवटी, रामेश्वरम् इत्यादि नगर पवित्र धार्मिक स्थल बन कर दर्शन के लिए उत्तर की जनता को लालायित करने लगे। सांस्कृतिक आदान–प्रदान का यह उपाय अनुपम तो है ही, सरल भी है। राम की इन लीलास्थलियों की पावन यात्रा धार्मिक जीवन को तो तृप्ति देती ही है, समन्वयत्व के आन्तरिक बन्धन को भी दृढ़ करती है।

भारत दो संस्कृतियों का मिला जुला देश है। आर्य और अनार्य संस्कृतियों सभ्यता के आदि से ही भारतीय परिवेश को व्याप्त किए है। शिव अनार्य देवता हैं वे बारम्बार अभयत्व प्रदान कर आसुरी संस्कृति को प्रश्रय देते है, विष्णु अवतार लेकर उस अपसंस्कृति के संरक्षकों का नाश कर भारतीयता की रक्षा करते है। वाल्मीकि ने रामायण में वैष्णव और शैव सम्प्रदाय की इन दो पृथक् ज्योंतियों को एकाकार, एकदीप्त करने का अपरोक्ष मङ्गल समारम्भ कर दिया था।

ऋषि की एक सुयोग्यतम श्रद्धापात्र के नायकत्व में राष्ट्र को संगठित करने की यह दृष्टि अद्यतन प्रभावी है। आज भी राम हमारे राजा हैं और हम उनकी प्रजा, आज भी हमारे हृदयों में स्थित राम के सिंहासन पर अन्य कोई सत्ताधीश नहीं बैठ सकता है। सत्ताधीश की मर्यादा है–प्राणिमात्र के प्रति समदृष्टि। महर्षि ने समदर्शी राम के चरित्र को यथार्थ की भावभूमि पर खड़ा करके मानवधर्म की स्थापना की है। वे रामायण के प्रारम्भ में ही देवर्षि नारद से जिज्ञसा करते हैं–चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु कोहितः [2] और देवर्षि उत्तर देते है– इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः [3] । चरित्र से वाल्मीकि अभिप्राय प्रजाकल्याणपरायणता से है। कवि अपने उद्देश्य में सफल भी है क्योंकि उनकी काव्यदृष्टि जीवन से ही प्राणमान् होती है। मानवता के आदर्श सन्देश, समरसता की नैतिक शिक्षाएँ राम की जीवनानुभूमि से ही स्पन्दित होती है। इस स्पन्दन से सृष्टि का कोई प्राणी अछूता नही हैं। मानवीय मूल्यों के संरक्षण की परिधि मे केवल मानव ही नहीं मानवेतर प्राणी भी समाहित हो गए है। आकाशचारी जटायु का कर्त्तव्यपालन के लिए किया गया प्राणोत्सर्ग उल्लेख है। वह जीवित रहते नारी की अस्मिता की रक्षा के लिए यथाशक्ति प्रयास करता है। उसी से राम को अपनी प्रिया सीता के हरण की प्रथम सूचना मिलती है और जटायु को राम दर्शन से मुक्ति [4], इसी प्रकार जटायु के अग्रज सम्पाती भी सीतान्वेषण में सहायक होकर रामकृपा से नवजीवन प्राप्त करते हैं। [5]

ऋषि ने भारतीयता की जीवित शक्ति नारी के विविध रूपों और शक्तियों की अवमानना कदापि नही की। रामायण के नारी पात्र आत्मबलिदान और सहिष्णुता की साक्षात् प्रतिमा है, उनका समग्र जीवन साधना और तपश्चर्या की कठोरतम साधना से ओतप्रोत है। नारी के अबलात्व और कोमलतम पक्ष को राम की चैतन्यता और हृदय के विकास ने सबल कर दिया है। उनके अभिशापों को राम ने स्वयं झेल कर अपने वरदानों से उनमें अक्षयशक्ति भर दी है। पश्चाताप की अग्नि में दग्ध हुई अहिल्या का आतिथ्य सत्कार ग्रहण कर [6] तथा भीलनी शबरी के द्वारा पूजित होकर [7] विशाल अयोध्या साम्राज्य के भावी सम्राटराम ने उन्हें नारीत्व के उच्चतम शिखर पर प्रतिष्ठापित किया है और यह सिद्ध कर दिया कि प्रेम और भक्ति में वह शक्ति है जो उच्च–निम्न, श्रेष्ठ–अवर का भेद मिटा कर समाज में समरूपता स्थापित करती है।

इतिहास साक्षी है कि अस्पृश्यता बौद्धों व जैनों के शाकाहार को वरीयता देने एवं आखेटक जातियों को मांसहार के कारण चाण्डाल मानने इत्यादि का परिणाम है जिसने समाज को निरंतर विशृंखलित किया है। वैदिक धर्म को उदात्त वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुयायी वाल्मीकि की रामायण में अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं है। उनके विचार में मानव के हृदय में मानव के प्रति सम्मानभाव जीवन की वास्तविक शान्ति का मूलमन्त्र है न कि वैभव, उच्चकुलीनता और शक्तिप्रदर्शन। निषादराज गुह के प्रति राम का अनन्य प्रेम [8] मानवता का उत्तम उदाहरण है, बन्धुत्व का सुन्दरतम पाठ है, आज की जाति आधारित राजनीति व्यवस्था के लिए एक चुनौती है। और उन संस्कृति की ज्योंति की पुनः प्रदीप्त करने के लिए सार्थक प्रेरणा है। योगियों के हृदय में रमण करने वाले राम से वाल्मीकि तपस्वी शम्बूक का वध केवल इसलिए करा देंगे कि वह शूद्र हैं। [9] विद्वानों को इस विषय की प्रामाणिकता के विषय में पर्याप्त संदेह है और वे इस अंश को प्रक्षिप्त मानते है। सत्य भी है जो हृदय किसी भाव का अनुभव नहीं करता, वह किसी की दशा में दूसरों के ऊपर उस भाव का मिथ्यारोपण नहीं कर सकता है।

मानवमूल्यों की स्थापना, जीवन को उदात्त बनाने की कला और धर्म के प्रति अनुकूलता से अमृत रस का सन्निवेश–इन प्राञ्जल गुणों के सम्मिश्रण से रामायण भारतीय सभ्यता का इतिहास बन गया है और प्रजारञ्जक राम साक्षात् विग्रहवान् धर्म। दम्भी रावण में इन गुणों का नितान्त अभाव था इसलिए तो वह अन्याय तथा अधर्म का प्रतीक था किन्तु उसके प्रति व्यवहार में भी राम का समत्व निरन्तर द्योतित है। मृत्यु को प्राप्त रावण की ओर सङ्केत कर वे विभीषण से कहते है–

भरणान्तानि वैराणि निवृत्तं नः प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव।। [10]

महनीय है वाल्मीकि की यह सूक्ति और विशाल है राम का हृदय। शत्रु के प्रति ऐसी उदार भावना भारतीय संस्कृति के अतिरिक्त अन्यत्र अश्रुत है। कवि ने तो लोकप्रतिनायक रावण का भी उल्लेख बहुधा महात्मा और महातेजा विशेषणो के साथ आदरपूर्वक किया है।

रामायण में पीड़ा, बाध, अन्याय, अत्याचार आदि अधर्म वृत्तियों के नीचे दबी समबुद्धि, सत्य, नीति आदि धर्मवृत्तियों को सबल किया गया है। इस सबलता से लोकमंगल का प्रकाश स्वतः फैल रहा है। लोक मंङ्गल विधान के सुन्दर व्यवस्थापन में कवि की लेखनी ने अधर्म और अमङ्गल को पराभूत कर दिया है। राजा दशरथ ने राम के राज्याभिषेक की अनुमति मन्त्रिपरिषद् से प्राप्त कर किन्तु वे ही राजा राम के वन चले जाने पर भरत के राज्याभिषेक के लिए मंत्रिपरिषद का समर्थन लेने का साहस न कर सकें। [11] कवि के विचार में संगठित लोकशक्ति सर्वाधिक सशक्त माध्यम है जो राजवंश के निर्णयों को भी बदल सकती है। कैकेयी के समक्ष राजा दशरथ की असमर्थता देख अयोध्यावासी सामूहिक बहिष्कार का निर्णय करते है समस्त नगर में विद्रोह होता है, नगर में मंगल ध्वनियाँ बन्द कर दी जाती है, देवमन्दिर सूने तथा मलिन रहते हैं और बाजार जनहीन। [12] लोक के माध्यम से लोकदुःख निवारण का यह रहस्य कवि की कविता का मर्म है।

कवि की दृष्टि में व्यक्ति वैयक्तिक स्तर पर पृथक् है किन्तु मानवीय सम्बन्धों के सूत्र में बँध कर, एक दूसरे के हिताचरण में सम्पृक्त रह कर

एक हैं। इस हिताचरण के उन्नयनु कवि के पात्र स्व के व्यूह से बाहर निकल परार्थ की अन्मुकता में विचरण करते हैं तभी तो महात्मा भरत कह सके हैं कि धर्मबन्धन के कारण मैं इस वध करने योग्य पापाचारिणी माँ को मार भी नहीं सकता हूँ–

धर्मबन्धेन बद्धोऽस्मि तेनेमां नेह मातरम्।
हन्मि तीव्रेण दण्डेन दण्डार्हा पापकारिणीम्।। [13]

वाल्मीकि की कवि प्रतिभा ने रामकथा के पात्रों में चरित्रों मे मानव समाज, मानव–व्यवहार तथ मानव सद्गुणों की पराकाष्ठा का ऐसा विलक्षण रङ्ग भरा है कि रामायण के श्लोक वेद वाक्य बन कर धर्मप्राण जनता में लोकप्रिय हो गए हैं वेद आदरणीय तो हैं लेकिन अनुकरणीय तो वही है जो रामायण में लिखा है– रामादिवत् वर्तिव्यं न रावणादिवत्– राम जिस मार्ग से गए है वही मार्ग सन्मार्ग है, वही मार्ग लोक के लिए इष्ट है । उस मार्ग पर चलने वाले का दुःख सम्पूर्ण संसार का दुःख है, पशु–पक्षी भी उसके दुःख में सहायक है किन्तु विपरीत आचरण वाला अपनी तथा अपने कुल की अधोगति का कारण होता है।

आज न राम है न उनका बनाया सेतु, न लङ्का है न अयोध्या, काल के अन्तराल ने सब कुछ नष्ट कर दिया है। अवशिष्ट है केवल राम का मानव के प्रति किया गया समत्वव्यवहार, प्राणिमात्र के प्रति समदर्शी भावना और उससे अनुस्यूत उज्जवल यश, जो कभी विनष्ट नहीं होगा।

संदर्भ :

1. बालकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 17.2
2. बालकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 1.3
3. बालकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 1.8
4. अरण्यकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 68.9.37
5. किष्किन्धाकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 62.6., 63.13
6. बालकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 49.16.18
7. अरण्यकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 14.32–34
8. अयोध्याकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 50.42.43
9. उत्तरकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 76.4
10. युद्धकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 109.25
11. अयोध्याकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 2.116
12. अयोध्याकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 48.4
13. अयोध्याकाण्ड (वाल्मीकि रामायण) 106.9